



प्रेस विज्ञप्ति

'उच्च नवीकरणीय एकीकरण के साथ माइक्रोग्रिड का विकास समय की मांग है': डॉ. आर.पी. सिंह

आईआईटी भुवनेश्वर ने 'वैश्विक स्थिरता में विद्युत प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका' पर चर्चा आयोजित की

भुवनेश्वर, 19 सितंबर 2024: "हाल के दिनों में विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता और खपत कई गुना बढ़ गई है, जिसका वैश्विक स्तर पर स्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इस संदर्भ में, उच्च नवीकरणीय एकीकरण के साथ माइक्रोग्रिड के विकास जैसे नवाचार समाधान समय की मांग है," डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, आईआईटी भुवनेश्वर ने कहा। 18 और 19 सितंबर 2024 को संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने वैश्विक स्थिरता में विद्युत प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर बात की। यह बातचीत संस्थान द्वारा इंजीनियर दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित की गई थी।

अपने संबोधन में डॉ. सिंह ने आधुनिक समाज में विद्युत ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा की। उन्होंने शानदार ढंग से दिखाया कि कैसे एक विद्युत ऊर्जा प्रणाली मानव शरीर के समान होती है, हृदय जनरेटर है, धमनी प्रणाली ग्रिड है, रक्तचाप वोल्टेज है, हृदय गति आवृत्ति है, मस्तिष्क नियंत्रण प्रणाली है और गति बैटरी है। डॉ. सिंह ने जलवायु परिवर्तन, वैश्वीकरण और जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न गंभीर चुनौतियों पर प्रकाश डाला, ये सभी विद्युत ऊर्जा की खपत को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। उन्होंने बिजली की बढ़ती मांग में योगदान देने वाले कई कारकों की ओर इशारा किया, जैसे कोयले और तेल भंडार की कमी, जलविद्युत और परमाणु ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की चुनौतियां, और केंद्रीकृत उत्पादन प्रणालियों से बिजली संचारित करने की बढ़ती लागत। उन्होंने दूरदराज के क्षेत्रों में बिजली पारेषण की बढ़ती चुनौतियों और सिस्टम विश्वसनीयता पर बढ़ती चिंताओं पर भी जोर दिया। इन मुद्दों के जवाब में, डॉ. सिंह ने व्यवहार्य समाधान के रूप में, विशेष रूप से सौर और पवन ऊर्जा के माध्यम से, नवीकरणीय ऊर्जा और स्थानीय ऊर्जा प्रणालियों के एकीकरण की वकालत की। उन्होंने सुझाव दिया कि इन दृष्टिकोणों से टिकाऊ ऊर्जा स्रोत, ट्रांसमिशन लागत कम हो सकती है, सिस्टम हानि कम हो सकती है और अधिक विश्वसनीय बिजली आपूर्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने ऊर्जा प्रबंधन को बढ़ाने के लिए नेटवर्क वाले माइक्रोग्रिड और वर्चुअल पावर प्लांट (वीपीपी) बनाने की क्षमता को रेखांकित किया।

संबोधन से पहले, डॉ. सिंह ने प्रभावी नेतृत्व पर एक प्रस्तुति भी साझा की और छात्रों से गैर-पारंपरिक निर्णयों और जोखिम लेने वाले रवैये के साथ आगे बढ़कर नेतृत्व करने का आग्रह किया।

इस अवसर पर बोलते हुए, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपाद कर्मलकर ने सूचना और ज्ञान के बीच अंतर प्रदर्शित करने और गैर-विशेषज्ञ दर्शकों तक जटिल विचारों को पहुंचाने में इसकी प्रभावशीलता के लिए डॉ. सिंह की बात की सराहना की और उन्होंने कहा: " यदि आप अपनी दादी को अपने तकनीकी विचार समझा सकते हैं तो आप संचार कौशल होने का दावा कर सकते हैं। डॉ. सिंह ने प्रदर्शित किया कि यह कैसे किया जाता है। स्लाइड में कम से कम बड़े फ़ॉन्ट आकार का टेक्स्ट होना चाहिए। पाठ की अपेक्षा रेखाचित्रों को प्राथमिकता दी जाती है। जटिल विचारों को समझने के लिए कल्पनाशील उपमाओं और उपाख्यानों का उपयोग किया जाना चाहिए। व्यक्ति तेजी से सोच सकता है लेकिन धीरे-धीरे बोलना चाहिए।" प्रो. कर्मलकर ने उन तरीकों को भी साझा किया जिनसे संस्थान अपने छात्रों और कर्मचारियों के संचार कौशल विकसित कर रहा है। प्रत्येक संकाय को 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों और उनके अभिभावकों को उनकी विशेषज्ञता से संबंधित विषय पर संबोधित करना आवश्यक है। संकाय में संचार कौशल विकसित करने और समझ को गहरा करने के अलावा, इससे संस्थान की धारणा को भी बढ़ावा मिलेगा। छात्रों के लिए संस्थान में ऐसे पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं जहां छात्रों को अनुसंधान और उद्यमिता के लिए अपने संचार कौशल को निखारने का मौका मिलता है।

प्रो. पी. दिनाकर, डीन (प्रायोजित अनुसंधान एवं औद्योगिक परामर्श) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

संस्थान के अत्याधुनिक 1500 सीटों वाले सभागार में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम को संस्थान के सदस्यों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली।
